

— 4) Schnauze (eines Gefäßes) KĀTJ. ÇR. 9, 13, 14. — 5) Oeffnung, Eingang, Ausgang; = निःसरण AK. 2, 2, 18. H. 982. H. an. MED. HALĀJ. 2, 134. कोटर° ÇĀK. 14. द्रो° (zugleich Mund) KUMĀRAS. 1, 8. गुहा° MBH. 3, 16118. KATHĀS. 33, 203. बिल° 36, 225. संधि° MRĀKH. 48, 11. ततो ब्रणामुखैश्चैव मुखाव हृदिरे बद्ध HARIV. 11939. विन्ध्याटवीमुखे am Eingange des Waldes MUDRĀR. 11, 15. तत्तु (देवकुलं) चैत्यं विना मुखम् HĀR. 198. स्वर्गस्य Eingang zum Himmel MBH. 3, 4341. नरकपुर° Spr. 392. नदी° Mündung eines Flusses RAGH. 3, 28. Am Ende eines adj. comp.: दीर्घमुखा शाला P. 6, 2, 167, Sch. सकृत् (बिल) tausend Aus- oder Eingänge habend PAÑĀT. 107, 2. शत° (बिल) Spr. 89. KATHĀS. 61, 69. HIT. 14, 18, v. 1. विवेकप्रष्टानां भवति विनिपातः शतमुखः aus hundert Oeffnungen erfolgend so v. a. plötzlich, jäh Spr. 2982. — 6) Vordertheil, Spitze: पृथु° adj. breites Vordertheil habend KĀTJ. ÇR. 7, 4, 8. सेना° TBR. 3, 8, 23, 1. आसिं यतामभिसृष्टानां चापुर्मुखं प्रथमः प्रत्यप्यत Vāju kam zuerst an die Spitze der Laufenden d. h. gewann den Vorsprung (SĀJ. an das Ziel) AIT. BR. 2, 25. घञिनीमुखे MBH. 3, 15723. R. 2, 98, 25. 6, 29, 29. मुखमासीत् सैन्यस्य कृन्मान् MBH. 3, 16284. सोमे ऽयं मुखमभि-पर्याकरदनुष्टुभम् AIT. BR. 3, 13. कृत्° R. 5, 19, 4. HALĀJ. 3, 46. शल्यानीम् VS. 16, 13. 53. वज्रस्य TS. 7, 4, 2, 1. शैर्दीर्घमुखैः MBH. 3, 11960. R. 6, 79, 69. 73. fg. RAGH. 3, 59. 12, 96. 98. HALĀJ. 2, 314. मृगपत्निषां मुखैर्मुखा-नि पत्न्याणां सदृशानि SUÇR. 1, 24, 2. 23, 1. fgg. स्तनद्वय° Brustwarze HARIV. 2902. घ्राणीलमुखं स्तनद्वयम् RAGH. 3, 8. अङ्गुली° Fingerspitze H. 144. ÇIÇ. 9, 64. Schneide: कुठारस्य Spr. 3258. Oberfläche: विषकुम्भं पयोमुखम् Spr. 1729. वाद्यभाण्ड° die obere Seite (der Trommel) AK. 3, 4, 23, 188. मृदङ्गे मुखलेपेन करोति मधुर्घनिम् Spr. 748. — 7) das Haupt, der Beste, Vorzüglichste, = श्रेष्ठ H. an. = प्रधान ÇABDAR. im ÇKDR. अग्निमुखं प्रथमो देवतानाम् AIT. BR. 1, 4. मुखमसि मुखं भूयासम् 2, 22, 7, 16. ÇAT. BR. 12, 3, 2, 10. मुखमकं श्रेष्ठः समानानां भूयासम् KAUC. 90. राज° TBR. 3, 8, 23, 1. अग्निहोत्रमुखा वेदा गायत्री कृन्दसो मुखम् । राजा मुखं म-नुष्याणां नदीनां सागरो मुखम् ॥ नक्षत्राणां मुखं चन्द्र आदित्यस्तेजसो मुखम् । पर्वतानां मुखं मेरुर्गङ्गाः पततो मुखम् ॥ MBH. 2, 1395. M. 2, 81. स हि राष्यस्य सर्वस्य मुखमेको भविष्यति R. 2, 53, 12. तत्रं ब्रह्ममुखम् (adj.) 1, 6, 16. ज्ञापते सर्वाविद्यानां मुखं व्याकरणम् KATHĀS. 6, 144. 4, 22. Am Ende eines adj. comp.: प्रज्ञापतिमुखाभिर्देवताभिः ÇAT. BR. 13, 1, 8, 2. — 8) Anfang, Beginn; = प्रारम्भ H. an. MED. पञ्चानाम् VS. 29, 6. पञ्च° AIT. BR. 1, 8. ÇAT. BR. 1, 1, 2, 3. सवन° LĀTJ. 1, 9, 4. स्वाध्यायास्य RV. PRĀT. 13, 4. संवत्सरस्य TS. 7, 4, 8, 2. ÇĀKH. BR. 4, 4, 5, 1. ऋतु° Spr. 3414. PAÑĀV. BR. 21, 13, 2. सुरभिमास° ad ÇĀK. 133. तपादा° R. 2, 30, 7. H. 144. निशा° MBH. 1, 703. KATHĀS. 72, 26. Spr. 3807. GĀT. 2. PAÑĀT. 29, 16. 85, 6. अङ्गः PAÑĀR. 3, 11, 2. अर्कमुखे Verz. d. Oxf. H. 237, a, No. 368. दिन° RAGH. 9, 25. दिवस° 3, 76. कामुदो° 3, 1. तेजःपरिहानमुखात् VARĀH. BRH. S. 47, 21. ब्रह्मणो मुखेन mit dem Brahman voran KHĀND. UP. 3, 10, 1, 3. Am Ende eines adj. comp. — zum Anfang habend, damit beginnend RV. PRĀT. 18, 7. महासतोमुखा 14. गणने भवन्मुखे Spr. 3882. SĀH. D. 23, 12. परिणाममुखमिदमतेः (vielleicht ist मुखम् st. मुखम् zu lesen) — यौवनम् MĀLAV. 79. (महारथाः) जयद्रथमुखाः Gajadratha und Andere, Gajadr. n. s. w. MBH. 1, 532. 3, 1997. 4, 85. गङ्गामुखीभिः (°मु-खाभिः die neuere Ausg.) सरिद्रिः HARIV. 2967. R. 4, 48, 1. RAGH. 8, 21.

KATHĀS. 44, 130. 72, 396. ग्रामाः — जयस्वल्मुखः (जयस्वल् N. pr. eines Grāma) RĀĀ-TAR. 3, 121. इष्टिप्रसोमामुखैर्मुखैः PRAB. 107, 3. AK. 1, 1, 1, 47. 2, 28. 3, 38. TRIK. 1, 2, 36. 3, 1, 24. H. 183. 1200. Zum Ueberfluss noch आदि hinzugefügt: भूयात्मन्निसेनापातिमुखाद्यः KATHĀS. 66, 43. In der Math. the first term, the initial quantity of the progression COLEBR. Alg. 32. — 9) Anfang so v. a. Anlass, Veranlassung: विनाश° MBH. 3, 16008. अन्वयस्यास्य तु मुखं भीष्मः शासनवो मम 3, 6008. धैर्यं च विशते योधान्विजयस्य मुखं च तत् 12, 3766. तावुभौ ब्रह्मिनाशस्य मुखमास्ताम् 16, 156. In der Dramatik der erste Anlass der Handlung DAÇAR. 1, 23. PRATĀPAR. 21, a, 1. Hierher vielleicht die Bed. संध्यत्तर und नाटकदिः शब्दः (woraus ÇABDAR. nach ÇKDR. zwei Bedeutungen: नाटक und शब्द macht) MED. — 10) Mittel, = उपाय H. an. MED. उपन्यासमुखेन vermittelt ÇĀKH. bei WIND. Samkara 94. — 11) the side opposite to the base: the summit COLEBR. Alg. 72. — 12) = वेद ÇABDAR. im ÇKDR. — 13) m. Artocarpus Locucha (s. लकुच) ROXB. ÇABDĀ. im ÇKDR. — Vgl. अ°, अन्तर°, अत्र°, अथो° (in der ersten Bed. auch PAÑĀT. 84, 8), अग्नि°, अयो°, अवाञ्छुख (auch VARĀH. BRH. S. 53, 51. 110), अश्रु°, अश्व°, अष्टी°, उदञ्छुख, उन्मुख, उत्का°, ऊर्ध्व° (auch VARĀH. BRH. S. 93, 11), ऋतु°, एक°, कङ्क°, कथा°, काल°, कालिका°, क्रव्य°, गो°, गौर°, चतुर्मुख, ज्ञाति°, ज्योतिर्मुख, ज्वाला°, दत्तिणा° (auch MBH. 17, 43), दधि°, दश°. दिञ्छुख, दिवस°, दुर्मुख, नन्दी°, नव°, नान्दी°, निशा°, पद्ममुखी, पराञ्छुख, पुण्डरीकमुखी, पुरुषमुख, पूर्णा°, पूर्वपञ्चान्मुख, प्र°, प्रति°, प्रत्यञ्छुख, प्राञ्छुख (auch SÜRJAS. 4, 9, 6, 9), फणि°, बहिर्मुख, बङ्क°, भद्र°, भाग°, मर्त्य°, मलिन°, महा°, मातृ°, म्लेच्छ°, यज्ञ°, रथ°, वडवा°, वलि°, वली°, वि°, विश्वतो°, शङ्क°, शत°, शिली°, षण्मुख, सं°, सर्वतो°, सु°, सूची°, सेना°, स्तन°, स्वस्ति°, मुख्य, मौख.

मुखलुर (मुख + लुर) m. Zahn H. c. 121.

मुखगन्धक (von मुख + गन्ध) m. Zwiebel RĀĀN. im ÇKDR.

मुखघण्टा (मुख + घण्टा) f. Bez. eines best. mit dem Munde hervorgebrachten Tones, = कुलकुली TRIK. 2, 7, 29. HĀR. 177.

मुखचपल (मुख + च) 1) adj. geschwätzig, schwatzhaft; davon nom. abstr. °ल n. VARĀH. BRH. S. 104, 2. — 2) f. आ ein best. Ārjā-Metrum COLEBR. Misc. Ess. II, 154, a. Ind. St. 8, 296. fgg.

मुखचपेटिका (मुख + च) f. Ohrfeige; s. उर्दान°.

मुखचीरी (मुख + ची) f. Zunge ÇABDAM. im ÇKDR.

मुखज (मुख + ज) 1) adj. aus dem oder im Munde entstanden. — 2) m. a) ein Brahmane (der aus Brahman's Munde Entstandene; vgl. M. 1, 31) ÇABDĀRTHAK. bei WILS. — b) Zahn WILSON.

मुखनाक (मुख + नाक) n. = मुखस्य मूलम् Schlundkopf gaṇa कर्पादि zu P. 5, 2, 24.

मुखण्डी f. eine Art Waffe HALĀJ. 2, 321. मुखण्डी H. 787, Sch.

1. मुखत्सु (von मुख) adv. vom Munde her, am Munde, mittelst des Mundes. vorn, an der Spitze, von vorn: मुखतः पाठयामास शस्त्रेण निशितेन च — भुङ्गम् MBH. 3, 2389. अज्ञानं मुखतो मेध्यम् JĀĀN. 1, 194. RV. 1, 162, 2. मुखत एवास्मै ब्रह्म संश्रयति TBR. 1, 7, 2. संवत्सरस्य 1, 2, 8. मुखतः प्रातरनुवाके न्यूङ्गयति मुखतो वै प्रजा अन्नमदति मुखत एव तदन्नाद्यस्य यजमानं दधाति AIT. BR. 3, 3. मुखतो ऽस्य पृश्नः कल्पते TS. 1, 6, 8, 2. 5, 1, 8, 3. 3, 3, 3. 7, 2, 2. ÇAT. BR. 1, 4, 1, 37. 11, 3, 4, 17. 12, 5, 2, 10. 13, 4, 1, 12.